राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

कविता का सार / प्रतिपाद्य

प्रस्तुत पाठ सीता स्वयंवर से लिया गया है। राम जब सीता स्वयंवर में धनुष उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाते हैं, तो वह टूट जाता है। उसकी गर्जना से परशुराम को पता चल जाता है कि किसी ने शिव धनुष तोड़ दिया है। अतः वह उस व्यक्ति को मारने के लिए राजा जनक की सभा में जा पहुँचते हैं। उनके अहंकारपूर्ण और कठोर वचन सुनकर लक्ष्मण क्रोधित हो जाते हैं और दोनों के मध्य संवाद आरंभ होता है। लक्ष्मण अपनी वाकपटुता से परशुराम के अहंकार को तोड़ देते हैं। परशुराम अपने अहंकार से स्वयं ही हँसी के पात्र बनते हैं। अंततः क्रोधित परशुराम को शांत करने हेतु राम बीच में हस्तक्षेप करके इस संवाद को समाप्त करते हैं।

राम की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- बड़ों का आदर करने वाले
- धैर्यवान
- साहसी
- विनम्र
- सरल
- वीर

लक्ष्मण की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- सबका सम्मान करने वाले
- अन्याय के विरोधी
- स्वाभिमानी
- स्पष्टवादी
- वाकपटु
- निडर
- चतुर
- वीर

परशुराम की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- विवेक विहीन
- शक्तिशाली
- अहंकारी
- बड़बोले
- क्रोधी
- जिद्दी
- वीर

भाषाशैली की विशेषताएँ

- दोहा और चौपाई छंद का प्रयोग
- वीर रस का सुंदर उदाहरण
- व्यंजना शक्ति का प्रयोग
- अलंकारों का सुंदर प्रयोग
- व्यंग्य शैली का प्रयोग
- परिष्कृत अवधी भाषा
- मुहावरेदार भाषा

कविता का संदेश

- मनुष्य को अहंकार नहीं करना चाहिए।